समय को पहचानना भाग 2

जैसा कि फ्रैंकलिन द्वारा प्रकाशितवाक्य पर लिखे नोट्स में पाया जाता है

संसार में जो कुछ हो रहा है उससे हम समझ सकते हैं कि हम **एक नए समय** में प्रवेश कर रहे हैं **जिसका द्वार** उन भविष्यवाणियों की पूर्णता में **अंत समय में खुलता है।** और यहाँ ऐसे ही एक समय में जीवन जीने के महत्वपूर्ण निर्देश दिए गए हैं :

रोमियों 13:11-14 **समय को पहिचान कर** ऐसा ही करो, इसलिये कि **अब** तुम्हारे लिये नींद से **जाग उठने** की घड़ी आ पहुँची है; क्योंकि जिस समय **हम ने विश्वास किया था, उस समय के विचार से अब हमारा उद्धार निकट है...** इसलिये 1 **हम अन्धकार के कामों** (1) **को त्याग कर** 2 **ज्योति के हथियार बाँध लें... प्रभु यीशु मसीह को पहिन लो,** और 3 **शरीर की अभिलाषाओं को पूरा करने का उपाय न करो।**

- ❖ यदि हम इसका अनुसरण नहीं करते तो हम शैतान के साथ अपने आत्मिक युद्ध में एक खुले द्वार का अवसर प्रदान करते हैं। गलातियों 5:17 इफिसियों 4:27 लूका 22:31

रोमियों 15:4 **जितनी बातें** पहले से लिखी गईं, वे **हमारी ही शिक्षा** के लिये लिखी गईं हैं कि हम **धीरज** (1) और पवित्रशास्त्र के **प्रोत्साहन** द्वारा **आशा** रखें। इसलिए जो कुछ स्मुरना कि कलीसिया को लिखा गया वह हमारे लिए भी प्रासंगिक है।

प्रकाशितवाक्य 2:8-11 स्मुरना की कलीसिया के दूत को यह लिख : जो प्रथम और अन्तिम है, जो मर गया था और अब जीवित हो गया है, वह यह कहता है कि 9 **मैं तेरे क्लेश** और **दरिद्रता को जानता हूँ परन्तु तू धनी है,** (हमारे पिता परमेश्वर के वारिस और यीशु के साथ सह-वारिस। रोमियों 8:17) और जो लोग अपने आप को **यहूदी कहते हैं और हैं नहीं,** (वे विश्वासी नहीं हैं) **पर शैतान की सभा हैं,** (उसका वंश हैं) 10 उनकी **निन्दा** को भी जानता हूँ। **जो दुःख तुझ को झेलने होंगे, उन से मत डर।** क्योंकि देखो, शैतान तुम में से

कुछ को **जेलखाने** में डालने पर है, क्यों? ताकि **तुम परखे जाओ**; और **तुम्हें दस दिन तक क्लेश उठाना होगा। प्राण देने तक विश्वासी रह, तो मैं तुझे जीवन का मुकुट दूँगा।** 11 **जिसके कान हों वह सुन ले** कि आत्मा **"कलीसियाओं"** उसकी कलीसिया, हर जगह के उसके लोगों, से क्या कहता है।

- प्रकाशितवाक्य 12:11 वे 1. **मेम्ने** के **लहू** के कारण और 2. **अपनी गवाही के वचन** के कारण उस पर (अजगर पर) **जयवन्त हुए**, और 3. **उन्होंने अपने प्राणों को प्रिय न जाना, यहाँ तक कि मृत्यु भी सह ली।**

- और याकूब 1:2-4 के उत्साहवर्धक वचन

  हे मेरे भाइयो, जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो, तो इसको पूरे आनन्द की बात समझो, 3 यह जानकर कि **तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज** उत्पन्न होता है। (2) 4 पर **धीरज** को अपना पूरा काम करने दो (कैसे? विश्वासयोग्य होने के द्वारा) **कि तुम पूरे** (मानसिक और नैतिक चरित्र) और **सिद्ध** हो जाओ, और तुम में किसी बात की घटी न रहे।

  कितने विश्वासयोग्य?

- **प्राण देने तक विश्वासी रह, तो मैं तुझे जीवन का मुकुट दूँगा।** शरीर तो मर जाता है परंतु हमारी आत्मा जीवित रहती है। विभिन्न उपलब्धियों के लिए सम्मानित करने के लिए 5 मुकुट हैं।

प्रकाशितवाक्य 3:7-13 फिलदिलफिया की कलीसिया के दूत को यह लिख : जो पवित्र और सत्य है, और जो **दाऊद की कुंजी** रखता है, (अपने राज्य और सृष्टि पर राजा के समान शासन करने के परम अधिकार की कुंजी। यशायाह 9:6-7) **जिसके खोले हुए को** (अंदर आने देने के लिए) कोई बन्द नहीं कर सकता और **बन्द किए हुए को** (अंदर न आने देना) कोई खोल

नहीं सकता, **वह यह कहता है** कि 8 **मैं तेरे कामों को जानता हूँ;** (2) (तूने जो किया है। इसलिए) **देख, मैं ने तेरे सामने एक द्वार खोल रखा है, जिसे कोई बन्द नहीं कर सकता;** (आज और सदा-सर्वदा के लिए उद्धार और आशीषों का द्वार।)

- **मैं तेरे कामों को जानता हूँ।** अर्थात् अपने जीवन को परमेश्वर के वचन की **आज्ञाकारिता** में जीना हमारे सामने खुले द्वारों और हमें अनुग्रह प्रदान करने की सबसे महत्वपूर्ण कुंजी है।

जो थोड़े से थोड़े में **सच्चा है,** वह बहुत में भी सच्चा है। अतः **यदि आप सच्चे नहीं रहे हैं तो,** लूका 16:11 कुछ द्वार खुले नहीं हो सकते। यदि हम अंधकार के **कार्यों** को दूर नहीं करते और **शरीर की अभिलाषाओं को पूरा करने का प्रयास करते हैं** तो **यह कामुकता है।** रोमियों 13:14

1 पतरस 2:12 **अन्यजातियों में तुम्हारा चालचलन भला हो; ताकि** जिन-जिन बातों में वे तुम्हें कुकर्मी जानकर बदनाम करते हैं, **वे तुम्हारे भले कामों को** देखकर उन्हीं के कारण कृपा-दृष्टि के दिन **परमेश्वर की महिमा करें।**

1 कुरिन्थियों 10:31 इसलिये तुम... चाहे जो कुछ करो, सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिये करो।

यह हमारा **सबसे महत्वपूर्ण कार्य** है, हमारे **काम** -> **जो हमने किए हैं।** मत्ती 7:24-27 इसलिये जो कोई मेरी ये बातें (1) **सुनकर** उन्हें (2) **मानता है,** वह उस **बुद्धिमान** मनुष्य के समान ठहरेगा जिसने **अपना घर चट्टान पर बनाया।** 25 **और जब जीवन की आन्धियाँ चलीं, फिर भी वह नहीं गिरा, क्योंकि उसकी नींव चट्टान पर डाली गई थी।** 26 परन्तु जो कोई मेरी ये बातें (1) **सुनता है** और (2) **उन पर नहीं चलता,** वह

उस **निर्बुद्धि मनुष्य** के समान ठहरेगा जिसने अपना घर **बालू पर** बनाया। 27 **और जब आन्धियाँ चलीं तो वह गिरकर सत्यानाश नहीं हुआ।**

- ❖ हमें यह समझाने में सहायता करनेवाला एक और दृष्टांत मैं तुम्हारे कामों को जानता हूँ

लूका 19:11-28 यीशु ने उन्हें इस गलत अनुमान को सुधारने के लिए एक कहानी सुनाई कि परमेश्वर का राज्य तुरंत आरंभ हो जाएगा। 12 उसने कहा : एक धनी मनुष्य दूर देश को चला ताकि राजपद पाकर लौट आए (यीशु को वापस बुलाया गया जब उसने पृथ्वी पर अपना कार्य, अपने **काम** पूरे किए और उसे राजपद दिया गया।) 13 जाने से पहले, उसने अपने दासों में से दस को बुलाकर **उन्हें दस मुहरें दीं** और उनसे कहा, **'मेरे लौट आने तक लेन-देन करना।'** प्रत्येक के पास एक मुहर थी।

उन्हें दस मुहरें बाँट दीं उसने यह किया है :

- ❖ उसने हमें हर प्रकार की आत्मिक आशीषें प्रदान की हैं इफिसियों 1:3
- ❖ आत्मा के वरदानों के विषय में : जैसा वह चाहता है प्रत्येक को अपनी इच्छा के अनुसार उसने बाँट दिए 1 कुरिन्थियों 12:11
- ❖ पर हम में से हर एक को मसीह के **दान के परिमाण** के अनुसार **अनुग्रह मिला है** इफिसियों 4:7-8
- ❖ परमेश्वर **सब प्रकार का अनुग्रह तुम्हें बहुतायत से दे सकता है** जिस से हर बात में और **हर समय, सब कुछ**, जो तुम्हें आवश्यक हो, तुम्हारे पास रहे; और **हर एक भले काम के लिये तुम्हारे पास बहुत कुछ हो** (4) 2 कुरिन्थियों 9:8-9

❖ **मेरा अनुग्रह तेरे लिये बहुत है; क्योंकि मेरी सामर्थ्य निर्बलता में सिद्ध होती है।** 2 कुरिन्थियों 12:9

❖ उसके **भले कामों** को करने हेतु उसके अनुग्रह, उसकी सामर्थ्य को पाने के लिए हमें अपनी निर्बलता को मान लेना और उसकी ओर दृष्टि लगाना आवश्यक है ताकि **सब प्रकार का अनुग्रह तुम्हें बहुतायत** से मिले जिस से **हर एक भले काम के लिये तुम्हारे पास बहुत कुछ हो**

मेरे लौट आने तक लेन-देन करना।

❖ अर्थात् उसके राज्य को बढ़ाओ। संसार से उसके भंडार को एकत्रित करो (प्रेरितों के काम 1:2-8)। प्रत्येक प्रतिभा, प्रत्येक वरदान, प्रत्येक योग्यता जो उसने आपको दी है उसका सर्वोत्तम उपयोग करो, **अपनी शक्ति के द्वारा नहीं** बल्कि अपनी निर्बलता को मान लेने के द्वारा, उसका अनुग्रह मांगें।

❖ परमेश्वर के राज्य का यह कार्य उस हरेक कार्य से बहुत अधिक महत्वपूर्ण है जो हम दीं प्रतिदिन करते हैं। क्योंकि . . . .

15 जब **वह** राजपद पाकर **लौटा** (उसका दूसरा आगमन), तो ऐसा हुआ कि उसने **अपने दासों को** जिन्हें रोकड़ दी थी, **अपने पास बुलवाया** (बादलों पर उठा लिया जाना) ताकि मालूम करे कि उन्होंने लेन-देन से क्या-क्या कमाया। मुझे तो यह एक परख के समान लग रहा है।

❖ क्योंकि अवश्य है कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जाए, कि **हर एक व्यक्ति अपने** (5) **अपने भले बुरे कामों का बदला मिले** 2 कुरिन्थियों 5:10

मत्ती 16:27 मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों के साथ अपने पिता की **महिमा** में आएगा, और उस समय वह हर एक को उसके **कामों** के अनुसार **प्रतिफल देगा**।

वापस अपने दृष्टांत की ओर : लूका 19:16

तब पहले ने आकर कहा, हे स्वामी, **तेरी मुहर से दस और मुहरें कमाई हैं**। 17 **धन्य, हे उत्तम दास! तू बहुत ही थोड़े में विश्वासयोग्य निकला** अब **दस नगरों पर अधिकार रख**। 18 दूसरे ने आकर कहा, हे स्वामी, **तेरी मुहर से पाँच और मुहरें कमाई हैं**। 19 **तू भी पाँच नगरों पर हाकिम हो जा।**

- ❖ प्रकाशितवाक्य 5:10 तू ने उन्हें हमारे परमेश्वर के लिये एक राज्य और याजक बनाया; और **वे पृथ्वी पर राज्य करते हैं।**
- ❖ ऐसा प्रतीत होता है कि उसके साथ राज्य करने का हमारा पद इस बात से निर्धारित होगा कि हम उसका उपयोग कैसे करते हैं जो हमें दिया गया है।
- ❖ प्रकाशितवाक्य 20:6 वे परमेश्वर और मसीह के याजक होंगे और **उसके साथ हज़ार वर्ष तक राज्य करेंगे।**

20 तीसरा **केवल वही मुहर लेकर आया जो उसे दी गई थी**, और उसने कहा, स्वामी मैंने तेरी मुहर को अंगोछे में बाँध रखा है (मैंने उससे कुछ नहीं किया)। 21 **क्योंकि मैं तुझ से डरता था** (केवल डर और विश्वास बिल्कुल नहीं), इसलिये कि तू कठोर मनुष्य है : जो तू ने नहीं रखा उसे उठा लेता है, और जो तू ने नहीं बोया, उसे काटता है। (वह अवसर को नहीं देखता तथा बुरे कार्यों के राजा पर दोष लगाता है।)

22 उसने उससे कहा, **हे दुष्ट दास**, मैं तेरे ही मुँह से तुझे दोषी ठहराता हूँ। तू मुझे जानता था कि कठोर मनुष्य हूँ, जो मैं ने नहीं रखा उसे उठा लेता, और जो मैं ने नहीं बोया उसे

काटता हूँ; 23 तो तू ने मेरे रुपये सर्राफों के पास क्यों नहीं रख दिए कि मैं आकर ब्याज समेत ले लेता?' 24और जो लोग निकट खड़े थे, उसने उनसे कहा, वह मुहर उससे ले लो, और जिसके पास दस मुहरें हैं उसे दे दो। 25 उन्होंने उससे कहा, 'हे स्वामी, उसके पास दस मुहरें तो हैं।' 26 मैं तुमसे कहता हूँ कि जो **उसका उपयोग भली रीति से करते हैं जो उन्हें दिया गया है, उन्हें और भी दिया जाएगा**; परंतु जो **कुछ भी नहीं करते** उनसे वह भी जो थोड़ा उनके पास है ले लिया जाएगा। क्या यह "उपयोग करो या खो दो" है?

यह भी देखें, मत्ती 19:29 आगे बढ़ें :

प्रकाशितवाक्य 3:8 **तेरी सामर्थ्य थोड़ी सी तो है** (उसकी तुलना में), फिर भी (1) **तू ने मेरे वचन का *पालन किया है** **(उसका पालन किया है जो उसने बोला और लिखा है)** और (2) **मेरे नाम का *इन्कार नहीं किया।**

वह राजा और प्रभु है, **आज्ञा न मानने** का अर्थ है उस बात को **नजरअंदाज कर देना** जो वह है, और इस प्रकार हमारे ऊपर प्रभु के रूप में उसके नाम और अधिकार का इनकार कर देना।

ये दो बातें प्रभु के लिए और हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं, **उसके वचन का पालन करना** और **उसका इनकार न करना।**

उसने पिरगमुन कि कलीसिया को यही कहा है :

प्रकाशितवाक्य 2:12-13 पिरगमुन की कलीसिया के दूत को यह लिख : जिसके पास **दोधारी और तेज तलवार है**, वह यह कहता है कि 13मैं यह जानता हूँ कि तू वहाँ रहता है जहाँ शैतान का सिंहासन है; (हालाँकि वे इतने पापमय स्थान में रहते थे फिर भी) तू मेरे नाम पर स्थिर रहता है, और "मुझ पर" विश्वास करने से पीछे नहीं हटा।

हमें अर्थात् प्रभु की कलीसिया को दृढ़ खड़े रहने की जरूरत है।

-> उसके नाम की घोषणा करो -> उसके वचन की घोषणा करो और पीछे न हटो और विश्वास का इनकार करने का अर्थ है उसके नाम का इनकार करना।

1 पतरस 2:21-24 और **तुम इसी के लिये बुलाए भी गए हो,** क्योंकि मसीह भी **तुम्हारे लिये दुःख उठाकर तुम्हें** एक आदर्श दे गया है कि **तुम भी उसके पद-चिह्नों पर चलो।** 22 **न तो उसने पाप** किया और न उसके मुँह से **छल की कोई बात** निकली। 23 वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था, और **दुःख उठाकर** किसी को भी धमकी नहीं देता था, पर अपने आप को सच्चे न्यायी के हाथ में सौंपता था।

हमें उसके पद-चिह्नों पर चलना आवश्यक है... **और विश्वास के कर्ता और सिद्ध करनेवाले यीशु की ओर ताकते रहें,** जिसने **उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके** (3) **क्रूस का दुःख सहा,** और परमेश्वर के सिंहासन की दाहिनी ओर जा बैठा। 3 इसलिये उस पर **ध्यान करो,** जिसने अपने विरोध में पापियों का (4) **इतना विरोध सह लिया कि तुम निराश होकर साहस न छोड़ दो।** इब्रानियों 12:2-3

- ❖ और जब हम ऐसा करते हैं तो हमें यह प्रतिज्ञा मिली है :

प्रकाशितवाक्य 3:9 **देख,** मैं **शैतान के उन सभावालों** को तेरे वश में कर दूँगा जो **यहूदी** (विश्वासी) **बन बैठे हैं, पर हैं नहीं वरन् झूठ बोलते हैं**–देख, मैं ऐसा करूँगा कि वे आकर **तेरे पैरों पर गिरेंगे,** और **यह जान लेंगे** कि **मैं ने तुझ से प्रेम रखा है।** 10 **तू ने मेरे धीरज के वचन को थामा है,** (5) **इसलिये मैं भी तुझे परीक्षा के उस समय बचा रखूँगा जो पृथ्वी पर रहनेवालों के परखने के लिये सारे संसार पर आनेवाला**

है। शायद "भेड़ों को बकरियों" से "जंगली दानों को गेहूँ" से अलग करने के लिए? ऐसा लगता है कि "परीक्षा का समय" शुरू हो गया है।

- यह एक **महान संदेश** है कि **वह हमें परीक्षा के समय से बचा रखेगा।** इसका अर्थ शायद कलीसिया के महाक्लेश के समय से पहले कलीसिया के उठा लिए जाने के विषय में है।

- और यह हमारे लिए इतना प्रेरणादायक है कि हम **उसके वचन का पालन करें** और किसी भी तरह से **कभी उसका इनकार न करें** / अक्सर उसका नाम लें / और यदि जरूरत हो तो **प्राण देने तक भी** सारे विरोध को सहन करते हुए उसका क्रूस उठाएँ।

लूका 9:23-25 यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो "**अपने आपे से इन्कार करे**" और **प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए** हुए **मेरे पीछे हो ले**। 24 क्योंकि जो कोई **अपना प्राण बचाना चाहेगा वह उसे खोएगा,** परन्तु जो कोई **मेरे लिये अपना प्राण खोएगा वही उसे बचाएगा।**

1 पतरस 1:6-7 **इस कारण तुम मगन होते हो,** यद्यपि अवश्य है कि अभी कुछ दिन के लिये **नाना प्रकार की परीक्षाओं के कारण दुःख में हो;** 7और यह इसलिये है कि **तुम्हारा परखा हुआ विश्वास,** (परीक्षाओं का उद्देश्य यह है) **जो आग से ताए हुए नाशवान् सोने से भी कहीं अधिक बहुमूल्य है** (सोने और चाँदी को आग से शुद्ध किया जाता है)**,** यीशु मसीह के प्रगट होने पर **प्रशंसा और महिमा और आदर का कारण ठहरे।**

❖ हमारे चारों ओर के लोगों – विश्वासियों और अविश्वासियों – के सामने **प्राण देने**

तक विश्वासयोग्य बने रहना उन्हें यीशु के प्रति हमारे प्रेम और उस पर हमारे विश्वास को दिखाता है

और इसके परिणामस्वरूप मेम्ने को स्तुति और महिमा और आदर मिलेगा... क्योंकि **वह** वध किया गया और **उसने अपने लहू से परमेश्वर के लिए** हर जाति और भाषा और कुल और राष्ट्र से पुरुषों, स्त्रियों, लड़कों और लड़कियों को **मोल लिया है।** और मैंने सिंहासन और उन प्राणियों और उन प्राचीनों के चारों ओर बहुत से स्वर्गदूतों का शब्द सुना जिनकी गिनती लाखों और करोड़ों की थी, वे ऊँचे शब्द से कहते थे, वध किया हुआ **मेम्ना** ही **सामर्थ्य** और **धन** और **ज्ञान** और **शक्ति** और **आदर** और **महिमा** और **धन्यवाद** के **योग्य है!** फिर मैं ने स्वर्ग में और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे और समुद्र की सब **सृजी हुई वस्तुओं को**, और सब कुछ को जो उनमें हैं, यह कहते सुना, जो सिंहासन पर बैठा है **उसका** और **मेम्ने का धन्यवाद** और **आदर** और **महिमा** और **राज्य युगानुयुग रहे!** प्रकाशितवाक्य 5:9-13

उनमें से पहले जो **प्राण देने तक विश्वासयोग्य रहे**

- **पतरस** को उलटा क्रूस पर चढ़ाया गया
- **अन्द्रियास** को X आकार के क्रूस पर चढ़कर शहादत दी गई
- **याकूब –** को तलवार से मारा गया प्रेरितों के काम 12:1-2
- **यूहन्ना –** एकमात्र प्रेरित जो बुढ़ापे के कारण मरा। रोम के लोग उसे कोलिज़ीयम (गोलाकार इमारत जिसमें दर्शकों के बैठने की व्यवस्था हो) में ले आए और उसे उबलते तेल की एक बाल्टी में डुबो दिया। जब वह बिना किसी हानि के बाहर निकल आया तो पूरे कोलिज़ीयम ने मसीहियत को ग्रहण

कर लिया।

- **थोमा –** "थोमा के कार्य" नामक पुस्तक बताती है वह मयलापुर, भारत में शहीद हुआ जहाँ उसे भालों से छेदा गया।
- **पौलुस –** का सिर सम्राट नीरो के द्वारा कलम करवा दिया गया।
- शेष को विभिन्न भीषण तरीकों से मार डाला गया।

अय्यूब के साथ-साथ ये लोग **हमारे लिए एक आदर्श हैं,** जैसे कि **हमें उनके लिए जो हमें देखते हैं आदर्श बनना है :** **जब वह मुझे ता लेगा तब मैं सोने के समान निकलूँगा। 11** मेरे पैर उसके मार्गों में **स्थिर रहे;** और **मैं उसी का मार्ग बिना मुड़े थामे रहा। 12 उसकी आज्ञा का पालन करने से मैं न हटा,** और **मैं ने उसके वचन अपनी इच्छा से कहीं अधिक काम के जानकर सुरक्षित रखे।** अय्यूब 23:10-12

हमारे लिए प्रभु की ओर से अंतिम, प्रोत्साहन देनेवाले शब्द :

प्रकाशितवाक्य 3:11 **मैं शीघ्र ही आनेवाला हूँ; जो कुछ तेरे पास है उसे थामे रह कि कोई तेरा मुकुट छीन न ले।**

- यदि हम निर्बल हो जाएँ, हार मान लें और "**उसके नाम का इनकार कर दें**" तो **हम अपने अनंत उद्धार को नहीं खोएँगे** जिसे अनुग्रह और उसके लहू के द्वारा ख़रीदा गया है, परंतु हम **अपना मुकुट खो देंगे।** जो अनंतता के लिए बहुत शर्मनाक होगा। स्वर्ग में हर कोई यह जान लेगा।
- कृपया इस गीत को सुनें : मैं यीशु का इनकार नहीं करूँगा

https://music.youtube.com/watch?v=lptpUUbfS9o&list=RDAMVMlptpUUbfS9o

फिलिप्पियों 1:20 मैं तो यही हार्दिक लालसा और आशा रखता हूँ कि मैं किसी बात में लज्जित न होऊँ, पर जैसे मेरे प्रबल साहस के कारण मसीह की बड़ाई मेरी देह के द्वारा सदा होती रही है, वैसी ही अब भी हो, चाहे मैं जीवित रहूँ या मर जाऊँ। क्योंकि मेरे लिये जीवित रहना मसीह है, और मर जाना लाभ है।

आमीन